



श्री राम कृष्ण शर्मा
पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड



प्रकाशक

श्री विश्वकर्मा साहित्य संकलन समिति

७७/० तिलपुरवा, नाका हिन्दोला

लखनऊ-२२६०१९



—: समर्पण :—

प्ररम आदरणीय स्वर्गीय पंडित रामाधीन पूरण शर्मा निवासी मकबूलगंज
“पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तिण्ड” नामक पुस्तक के रचयिता जिन्होंने
स्वजातीय भावना जगाने हेतु अनेक कष्टों का सामना करते हुए सन् १९११ में
सप्रमाण पुस्तक संक्षेप में लिखकर प्रकाशित की थी। हम इस महान आत्मा को
अपने धृढ़ सुमन अर्पित करते हैं।

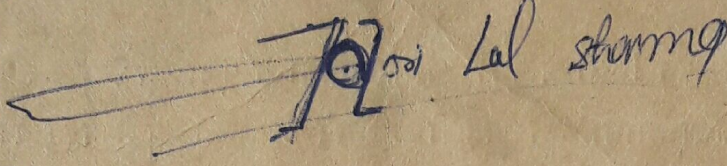
आत्मा प्रसाद शर्मा

६४३, राजेन्द्र नगर, लखनऊ

॥ ओइम् विश्वकर्मणे नमः ॥

पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड

(संशोधित संस्करण)



लेखक

स्व० श्री पंडित रामाधीन पूरण शर्मा

प्रस्तुतकर्ता

आत्मा प्रसाद शर्मा

६४३ राजेन्द्र नगर लखनऊ

प्रकाशक

श्री विश्वकर्मा साहित्य संकलन समिति, लखनऊ

वर्तमान पता

श्री विश्वकर्मा साहित्य संकलन समिति

द्वारा श्री शिव प्रसाद शर्मा

७३/२० तिलपुरवा, नाका हिन्दोला, लखनऊ

१७ सितम्बर १९८६

द्वितीय संस्करण १०००

सहयोगी २-००



पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति निर्णय

ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्वाहुराज्यन्यः कृतः ।

ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पदगम् शुद्रोऽजायत ॥

यजुर्वेद ३१/११

परमात्मा की सृष्टि में मुख सबसे उत्तम है (अर्थात् जो वाणी से प्रबल है) वह ब्रह्मण, बल बीर्य का नाम वाहु है जिसमें अधिक हो वह क्षत्रिय कटि के अधोभाग और जाँघ के ऊपर का नाम ऊरु है जो सब पदार्थों और सब देशों में जाँघ के बल से जाय या प्रवेश करे वह वैश्य, और जो पग के नीचे अंग के सदृश मूर्ख गुण वाला हो वह शुद्र है (शतपथ ब्राह्मण में भी ऐसा अर्थ किया गया है) ।

यस्मा देतेयमुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यऽजयन्त ।

जैसे मुख सब अंगों में श्रेष्ठ है वैसे ही पूर्ण विद्या और उत्तम गुण, कर्म स्वभाव से युक्त होने के कारण मनुष्य जाति में ब्राह्मण उत्तम है । सर्व विदित है कि गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण भेद सृष्टि के आरम्भ से है । (मनु महाराज ने ऐसा ही लिखा है ।)

लौकानां तु विवृद्धयर्थं मुखं वाहुरूपादतः ।

ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शुद्रं च निरवर्तयत् ॥

मनु० १/३१

सृष्टि कर्ता परमात्मा ने लोकों की वृद्धि के लिए मुख से ब्राह्मण, वाहु से क्षत्रीय, ऊरु से वैश्य और पाद के शुद्र इसी क्रम में उत्पन्न किये ।

ऊर्ध्वं नाभेर्मध्यतरः पुरुषः परिकीर्तितः ।

तस्मान्येध्यतमं त्वस्यमुखं मुक्तं स्वयंभुवा ॥

मनु० १/६२

पुरुष नाभि के ऊपर पवित्र है, इसमें उसका मुख पवित्रतम है । ऐसा परमात्मा ने कहा है ।

उत्तमाङ्गोभदवाज्जयंष्ठयाह ब्राह्मणश्चैव धारणात् ।

सर्वस्यैवास्यसर्गस्यधर्मतो ब्राह्मणः प्रभुः ॥ ९३

मुख तुल्य होने और ज्येष्ठता और वेद के धारण कराने तथा सम्पूर्ण जगत का धर्मानुशासन करने से ब्राह्मण प्रभु है ।

तंहिस्वयंभूः स्वादास्या तपस्तप्त्वादितोऽसृजत ।

हव्य कव्यामिवाह्या सर्वस्यास्य च गुप्तये ॥ ९४

ब्राह्मण को परमात्मा ने देवता और पितरों के हव्य कव्य पहुंचाने के लिए और सम्पूर्ण जगत की रक्षा के लिए निश्चित कर, अपने मुख से उत्पन्न किया है ।

यस्यास्येन सदाश्नन्ति हव्यानित्रिदिवौकसः ।

कव्यानि चैवपितरः किंभूतमधिकं ततः ॥ ९५

हवन में जिसके मुख से, त्रिदिवौकस, पृथ्वी, अन्तरिक्ष देव के रहने वाले हव्यों को और पितर कव्यों को पाते हैं उस से अधिक (श्रेष्ठ) कौन प्राणी है ।

भूतानां प्राणीनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।

बुद्धिमत्सुनराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥ ९६

भूतों के बीच में प्राणी श्रेष्ठ है इनमें भी जो बुद्धिजीवि हैं उन सबमें मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है ।

ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सुकृतबुद्धयः ।

कृत बुद्धिषु कतरिः कर्तृषु ब्रह्मा वेदिनः ॥ ९७

ब्राह्मणों में भी अधिक विद्यायुक्त ब्राह्मण श्रेष्ठ है । विद्वानों में जिन को श्रौतिक कर्मों के विषय की कर्तव्य बुद्धि हो और उनसे करने वाले और कगाने वालों से ब्रह्मज्ञ (ब्राह्मण) श्रेष्ठ है ।

उत्सृजतिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती ।

सहिधर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभू यायकल्पते ॥ ९८

ब्रह्मज्ञ की उत्पत्ति, धर्म की शाश्वत मूर्ति है । ऐसा ब्राह्मण धर्मार्थ उत्पन्न हुआ है एवं मोक्ष का अधिकारी है ।

ब्राह्मणो जायमानोहि पृथिव्यामधि जायते ।

ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोशस्य गुप्तये ॥ ९९

ब्राह्मण वर्ग में उत्पन्न होना ही पृथ्वी में श्रेष्ठ होता है क्योंकि सम्पूर्ण जीवों के धर्म रूपी खजाने के रक्षार्थ वह प्रभु है (अर्थात् धर्म का उपदेश ब्राह्मण द्वारा ही होता है ।)

सर्व स्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किञ्चिज्जगती गतम् ।

श्रेष्ठयेनाभि जानेनेदं सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति ॥ १००

जो कुछ जगत के पदार्थ हैं वे सब ब्रह्मणों के हैं ब्राह्मणोत्पत्ति स्वी श्रेष्ठता के कारण, ब्राह्मण सम्पूर्ण को ग्रहण करने योग्य है ।

मुखतोऽस्य द्विजा जाता वाहुभ्याक्षं त्रियास्तथा ।

ऊरुभ्यां च तथा वैश्याः पदभ्यां शूद्राः समुदभवाः ॥

भविष्य पुराण

ब्राह्मण परमात्मा के मुख से, क्षत्रिय वाहु से, वैश्य जंघा से और शूद्र पाद से उत्पन्न हुए हैं ।

सृष्टि के आरम्भ में ब्राह्मण की एक ही जाति थी और सब का भोजन एक ही था ।

नविशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत ।

ब्रह्मणा पूर्वं सृष्टहि कर्माभिर्वर्णतां गतम् ॥

महाभारत आ० ११२/१०

सृष्टि के आरम्भ में वर्ण भिन्न न थे ब्राह्म वा ब्रह्मा से उत्पन्न होने के कारण सभी ब्राह्मा या ब्राह्मण थे ।

एक वर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद युधिष्ठिर ।

कर्म क्रिया विभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम् ॥

महाभारत वनपर्व अ० १८०/२२

हे युधिष्ठिर यह सारा जगत पहले एक ही वर्ण था परन्तु कर्म और क्रिया के भेद से चार वर्ण हो गया ।

सृष्टियारम्भे ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्त्तिता ।

एवंपूर्वजातिरेको देशभेदाद्द्विधा भवत ॥

सृष्टि के आरम्भकाल में ब्राह्मणों की एक ही जाति आचार्यों ने कहा है । इसलिए पूर्व में एक ही जाति हुई देश भेद से दो भेद हो गये । गौड़ और द्राविड़ में निवास करने के कारण गौड़ और द्राविड़ दो भेद हुए ।

(०)
गौड़ाश्च पंचशाखाताः द्राविडाः पंचधा तथा ।

देश भाग विभादेन दशधा ब्राह्मणाः स्मृताः ॥

फिर पांच प्रकार के गौड़ और पांच प्रकार के द्रविण हो गये ।
भेद अनेक देशों में निवास करने के कारण हुए ।

गौड़ द्रविड़ भेदेन तयो भेदादशस्मृताः ।

चतुराशीति विप्राश्च दिग्भेदाश्च ततो ऽ भवन् ॥

आचार्यों ने जो पंच गौड़ और पंच द्रविड़ दस भेद कहे हैं । इन
भेदों से चौरासी प्रकार के ब्राह्मण हुए इन दस भेदों के नाम निम्न हैं ।

महाराष्ट्रांध्र द्राविडाः कर्णाटाश्चैव गुर्जराः ।

द्राविडाः पंचधाप्रोक्ताविध्यदक्षिणवासिनः ॥

सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौड़ मैथिल उत्फलाः ।

पंच गौडा इतिख्याला विध्यस्योत्तरवासिनः ॥

महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, द्रविड़, गुर्जर ये पांच द्रविड़ कहलाते हैं
जोकि विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण देश में निवास करते हैं, सारस्वत, कान्य कुब्ज
गौड़मैथिल, उत्कल ये पांच गौड़ कहलाते हैं जोकि विन्ध्याचल के उत्तर देश में
निवास करते हैं ।

पूर्वमेवं प्रसंगोभूत्सर्व जातिषु भोजनम् ।

वृद्ध परम्परा प्राप्तं कलौ त्याज्यं द्विजोत्तमैः ॥ ९

पूर्वकाल में इन दस प्रकार के ब्राह्मणों में परस्पर भोजन का व्यवहार था
परन्तु अनाचार के कारण कलयुग में ऐसा नहीं है ।

भेदा यद्यपि न प्राक्तो धर्मशास्त्रे द्विजोत्तमैः ।

तथापि भोजनं कार्यं स्वजातिषु सदावुधैः ॥ १०

धर्म शास्त्रों में ब्राह्मण को ब्राह्मण के घर भोजन करने में दोष नहीं
है इसलिए स्वजाति में भोजन करने का विधान है ।

यथा मन्वादिमिः प्रोक्तं चतुर्वर्णस्य वाडवैः ।

कन्या प्रतिगृहं कार्यं तद्वर्ज्यं कलियोगतः ॥ ११

मनु के अनुसार ब्राह्मण चारों वर्ण की कन्या से विवाह कर सकता था
परन्तु कलयुग में ऐसा नहीं है ।

एवंहि पंच गौडानां मितो भोजन मिष्यते । १२

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड से)

जिस प्रकार पंच द्विविधों में एक पंक्ति में भोजन कर ने में कोई दोष नहीं है (केवल शुद्ध आचार होना चाहिए) वैसे ही पंच गौड़े में भी दोष नहीं है।

देश भेद तथा आचार विचार में विरोधाभास और परस्पर भोजन व्यवहार बन्द हो जाने के कारण ब्राह्मणों की दशा, जो उच्च कोटि की थी वह समाप्त हो गयी जिस समय ब्राह्मणों में परस्पर भोजन व्यवहार प्रचलित तथा उनको गमना गमन में कष्ट नहीं होता था। तथा देश देशान्तर में जाकर विद्या अध्ययन करने कराने में सुगमता थी। आवागमन बन्द होने से कूप मण्डकूप हो गये। ऋषि सन्तानों को यह भी ज्ञान नहीं रहा कि हम कौन थे और हमारी दशा पहले क्या थी। उन दस विन्ध्य वासी ब्राह्मणों की शाखा में पंच गौड़ शाखा के अन्तर्गत पांचाल ब्राह्मणों का भी वही हाल हुआ। पांचाल शाखा के शुद्ध नाम पांचाल ब्राह्मण, विश्व ब्राह्मण, विश्वकर्मावंशीय (कोकास) या (कुक्कास) शिल्पाचार्य, वेदवद्वक्ति इत्यादि थे। इन् विश्वकर्मा के वंशजों को कलयुग में अविद्या के कारण बड़ई, सुतार, सुत्रधार इत्यादि कहते हैं।

विश्वकर्मा पांचाल

सृष्टि अल्पति के प्रारम्भ में चार ऋषि उत्पन्न हुए थे जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे इन चारों ऋषियों ने सर्व प्रथम मनुष्यों को उत्पन्न किया और उनको वेद और शिल्प विद्या का उपदेश दिया, क्योंकि शिल्प कर्म अति आवश्यक है बिना इसके मनुष्य का जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। इसलिए यह ऋषिगण शिल्प शास्त्र के विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते थे जिससे कारण सूत्रधार, वैद्य, कृषि, विद्वान् । चित्रघातु रत्नादिक खगोल शिल्पो आदि के अलंकार इनके लिये कहे गये हैं। शिल्प शास्त्र अथर्ववेद का उपवेद है। उधर्ववेद का प्रकाश सर्व प्रथम परमात्मा ने महर्षि अंगिरा के हृदय में किया था। इसीलिए महर्षि अंगिरा को विश्वकर्मा (अर्थात् विविध विमानादि रचना की) उपाधि मिली थी। महर्षि अंगिरा से जो वंश चला वह इस प्रकार है।

अंगिरा के बृहस्पति, बृहस्पति के भरद्वाज, भरद्वाज के भारद्वाज, भारद्वाज के दमनादि बहुत से पुत्र हुए। अंगिरा विश्वकर्मा के नाना थे। अंगिरा ऋषि की पुत्री बृहस्पति की भगिनी का विवाह अष्टम बसु "प्रभास" के साथ हुआ था। जिनसे विश्वकर्मा का जन्म हुआ।

विश्वकर्मा भवत्पूर्वं ब्रह्मणस्त्वं परातनुः ।

त्वष्टः प्रजापतेः पुत्रोऽनिपुणः सर्व कर्मसु ॥ ३

पूर्व समय में सम्पूर्ण सृष्टि कार्यों में निपुण व शिल्पादि कार्यों में परम प्रवीण त्वष्टा विश्वकर्मा के पुत्र हुए।

कृतोऽनयनः सोऽथ वालो गुरुकुले वसन् ।

चकार गुरुशुश्रूषा भिक्षान्नं कृत भोजनः ॥ ४

स्कन्द पुराण काशी खण्ड अ० ८६

वह विश्वकर्मा यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त गुरु कुल में निवास करते हुए और भिक्षान्न करके अपने गुरु की सेवा करते रहे।

इन विश्वकर्मा को चारों वेद तथा व्याकरण शास्त्र पढ़ाने से पंचानन की दूसरी उपाधि मिली इस प्रकार इनसे जो सन्तति हुई वह पांचाल ब्राह्मण कहलाई। क्योंकि "पञ्चपन्ति रचयन्ति विर्यन्त्राणि सः" अर्थात् जो अनेक प्रकार की रचना करे वही पांचाल है।

पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति

विश्वकर्मा भवत्पूर्वं सृष्ट यादौ विदितः श्रुतौ ।

रचित्वाखिल देवादीन् ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ॥ १

प्रथम वर्णित महर्षि अंगिरा विश्वकर्मा आदि सृष्टि काल में हुए जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, महेश नामक महर्षियों को वेदों का उपदेश दिया।

पश्चाद्बृह्मकुलेभूत्वा शिल्पविद्याप्रकाशकः ।

त्वष्टा प्रजापतेः पुत्रो निपुणः सर्व कर्मसु ॥ २

तत् पश्चात् शिल्प विद्या को प्रकाशित करने वाले सर्व कर्मों में निपुण त्वष्टा नाम के विश्वकर्मा पुत्र हुए।

ब्राह्मणां च जन्मैव विश्वकर्मा च जायते ।

विश्वकर्म समुत्पन्नाः पंचामिः कर्मभिर्द्विजाः ॥ ३

बाद में शैव पांचाल ब्राह्मण पंच मुखी विश्वकर्मा के मुख से लोक कल्याण के लिए पंच कर्मों सहित उत्पन्न हुए।

मनु मर्यस्तथा त्वष्टा शिल्पिश्च तथैव च ।

दैवज्ञः पंचमश्चैव ब्रह्मणाः पंचकीर्तिता ॥ ४

इन शैव पांचाल ब्राह्मणों के नाम मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी तथा दैवज्ञ हैं जो पांच कर्म से युक्त हैं।

मनुः संहारकर्ता च मयो वै लोकपालकः ।

त्वष्टा चोत्पत्तिकर्ता च शिल्पिको गृहकारकः ॥ ५

मनु शस्य निर्माण करके लोक संहार करने वाले, मय काष्ठ पदार्थ बनाकर सृष्टि पालन करने वाले त्वष्टा लोक हित में अनेक पदार्थ उत्पन्न करने वाले, शिल्पी घर, किला मंदिर आदि बनाने वाला हुए।

दैवज्ञः सर्व भूषादिकर्ता वै हितकाम्यवा ।

लोकानां पंच पांचालः अभूवन् विश्वकर्मणः ॥ ६

दैवज्ञ लोगों के हितार्थ सोने के अलंकार बनाने वाले हुए। ये सब शैव पांचाल लोक हित के लिए उत्पन्न हुए।

पांच लक्षण

पांचालाना च पंचानां वक्ष्ये लक्षण मुत्तम् ।

तस्य विज्ञान मात्रेण शिल्पाचारः स्फुटोभवेत् ॥ ७

अब इन पांचों के पांच लक्षण कटते हैं । जिनको जानने से शिल्प का आधार स्पष्ट हो जाना है ।

ऐश्वर्यं मनुष्यं च मयस्य वैष्णवम् ।

वैरिच त्वाष्ट रूपं च माहेन्द्रं शिल्पिकस्य च ॥ ८

मनु शिव रूप, मय विष्णु रूप, त्वष्टा ब्रह्म रूप, शिल्पी इन्द्र रूप, तथा देवज्ञ नारायण रूप हैं ।

रूप नारायणस्यैव देवज्ञस्य प्रकीर्तितम् ।

पंचरूपाणि योवेद मुच्यते सर्वकिल्बिषात् ॥ ९

इन पांच स्वरूप को जो जानते हैं । वे सब विघ्न बाधाओं से मुक्त हो जाते हैं ।

तमो गुणो मनुश्चैव मयः सत्त्वगुणः स्मृतः ।

रजोगुणोऽथ त्वष्टा च शिल्पिकस्त्रि गुणात्मकः ॥ १०

मनु तमो गुणी, मय सत्त्व गुणी, त्वष्टा रजोगुणी, शिल्पी सत्त्व, रज, तमोगुणी है ।

देवज्ञः शुद्ध सत्त्वश्च ब्रह्मांडे स विजायते ।

यौ वै गुणत्रयं वेद मुच्यते सर्वं बंधनात् ॥ ११

देवज्ञ शुद्ध सत्त्व गुणी है । इन पांचों गुणों को जानने वाले सब बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं ।

मनुः स्फटिक वर्णश्च नीलवर्णो मयः स्मृतः ।

त्वाष्ट्रकोरक्त वर्णश्च शिल्पिको धूम्रवर्णकः ॥ १२

मनु स्फटिक वर्ण, मय नील वर्ण, त्वष्टा लाल वर्ण शिल्पी धूम्र वर्ण के हैं ।

स्वर्गवर्णश्च देवज्ञः पंचवर्णाः प्रकीर्तिताः ।

पंचवर्णाश्च यो वेद मुच्यते सर्वपातकात् ॥ १३

देवज्ञ सुवर्ण की तरह पीत वर्ण के हैं । जो इन पांचों वर्णों को जो जानते हैं वह पातकों से मुक्त हो जाते हैं ।

मनोः कुंड त्रिकोण च चतुष्कोणं मयस्य च ।

वर्तुलं त्वाष्ट्रक चैव षट्कोणं शिल्पिकस्य वै ॥ १४

मनु का कुण्ड त्रिकोण, मय का कुण्ड चतुष्कोण, त्वष्टा का वर्तुल, शिल्पी का कुण्ड षट्कोण है ।

देवज्ञस्याष्टकोणं तु पंच कुंडानि तानिवै ।

एतानि चैव यो वेद सर्वदोषाद्विमुच्यते ॥ १५

देवज्ञ का कुण्ड अष्टकोण है इन पांच कुण्डों को जो जानते हैं वह सभी दोषों से मुक्त हो जाते हैं ।

रजतस्य मनोदंडो वेणुदंडौ मयस्य च ।

त्वाष्ट्रस्य ताम्रदंडश्च लोहदंडश्च शिल्पिनाम ॥ १६

मनु का रूपे का, मय का पीतल का, त्वष्टा का लोहे का दंड, तथा ताम्र का, शिल्पी का तथा

सुवर्णदंड आरुयातो देवज्ञस्या रामात्मकैः ।

पंचदंडाश्च यो वेद मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ १७

देवज्ञ का सुवर्ण का दंड है । यह पांच प्रकार के दंड हैं इनको जो जानते हैं, समस्त भय से मुक्त हो जाते हैं ।

रजतस्य मनोः सूर्यं पद्मां सूत्रं मयस्य च ।

ताम्रसूत्रं त्वष्ट्रकस्य कार्पास शिल्पिकस्य च ॥ १८

देवज्ञस्य समाख्यातं स्वर्णं सूत्रं महर्षिभिः ।

पंच सूत्राण्यो वेद सर्वपायैः प्रमुच्यते ॥ १९

मनु का रत्न की, मय का पद्म का, त्वष्टा का ताम्र का, शिल्पी का कपास का और देवज्ञ का सोने का सूत्र है जो इन सूत्रों को जानते हैं वह सब पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

पांचालो के कर्म

अयसांचमनुः कर्ता काष्ठकारो मयः स्मृतः ।
त्वष्ट्रकः कास्य कर्ता च शिलाकर्ता च शिल्पिकः ॥ २०

दैवज्ञः स्वर्णकारश्च पांचानां कर्म पचकप् ।
यो वेद पंचकर्माणि सर्व पापैः प्र मुच्यते ॥ २१

मनु का लोहे, कर्म मय का काष्ठ, कर्म त्वष्टा कासे के पदार्थ के बनाने वाले हैं शिल्पी पत्थर का काम करने वाले तथा दैवज्ञ सोने चांदी के पदार्थ बनाने वाले हैं, जो इन पांच कर्मों को जानते हैं वह सब पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

पांचालों के वेद

ऋग्वेदश्च मनोश्चैव यजुर्वेदो मयस्य च ।
सामवेदस्त्वाष्ट्र कस्थ त्वथर्वा शिल्पि कस्थ च ॥ २२
सुषुम्णामिध वेदोऽसौ दैवज्ञानां प्रकीर्तिताः ।
पंचवेदांश्च यो वेद सायुज्यं लभते नरः ॥ २३

मनु का ऋग्वेद, मय का यजुर्वेद, त्वष्टा का सामवेद, शिल्पी का अथर्ववेद तथा दैवज्ञ का सुषुम्णा वेद है । इन पांच वेदों को जानने वाले मनुष्य लाभ पाते हैं ।

शिल्पवेदश्च शिल्पानां पंचानां परिकीर्तितः ।
अध्ययनं च तमेव संहिता पंचकं स्मृतम् ॥ २४

इन पाँचों प्रकार के कार्य करने वाले शिल्पियों को शिल्पि वेद की पाँचो संहिता का अध्ययन करना चाहिए।

पांचाल के आचार

पांचालानां च सर्वेषां आचार इति गीयते ।
अष्टांग योगः कर्मषट् पंच यज्ञा इति श्रुतिः ॥ २५

यजनं याजनं चैव तथा अध्ययनं स्मृतम् ।
अध्यापनं ततः प्रोक्तं तथा दानं प्रतिग्रहः ॥ २६

यस, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारण और समाधि ये आठ अंग और षट् कर्म व पंच महायज्ञ पांचालों के आचार कहे गये हैं । यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना, दान देना और दान लेना यह षट्कर्म हैं ।

शमो दमस्तपः शौचं क्षांति राज्ञवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानं मास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम् ॥ २७

गीता १८/४२

शम, दम, तप, पवित्रता, क्षमा, कोमलता, ज्ञान, विज्ञान, आस्तिकता ये ब्राह्मण के कर्म भगवान् श्री कृष्ण जी ने गीता में कहे हैं ।

मैत्रं प्रशाधनं स्नानं दन्त धावनं मंजनम् ।
पूर्वाह्णं एवं कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम् ॥ २८

मनु० ४/१५२

मल त्याग, शरीर शुद्धि, स्नान, दन्त, धावन, अंजन और देवताओं के होम, यह कर्म प्रथम प्रहर में करने चाहिए ।

पूर्वा संध्याजपं स्तिष्ठेत्सा वित्री मार्क दर्शनात् ।
पश्चिमातु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ॥ २९

नित्यं नैमित्तिकं कर्म द्विजातीनां यथा क्रमम् ।
पितृयज्ञं भूतयज्ञं देवयज्ञं तथैव च ॥ ३०

जप यज्ञ ब्रह्मयज्ञं पंच यज्ञाश्चरन्ति वै ।
एवं त्रिविधं आचारः कर्त्तव्यस्ते द्विजातयः ॥ ३१

पांचाल ब्राह्मणों को प्रातः सूर्य निकलने तक और सांयकाल ताराओं के दर्शन तक बैठ कर गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए । पितृ यज्ञ, माता की सेवा करना, भूत यज्ञ, गायत्री मंत्र का जाप, ब्रह्म यज्ञ वेदों का पाठ करना, इन बातों का पालन करने वाले ब्राह्मण ही मोक्ष के भागी होते हैं । पांचाल ब्राह्मणों के पंच कर्म, गुण, कुण्ड, रूप, सूत्र, वेद, उपवेद शाखा इत्यादि को जो जानते हैं, वे संसार के बन्धनों से छूट कर मुक्ति पाते हैं ।

विश्वकर्मा पुत्रों का विवाह

मुनेरागिरसः पुत्री प्रसिद्धा कांचना वया ।
विश्वकर्म तनुजस्य मनोः पत्नी बभूव सा ॥
आगिरस मुनि की प्रसिद्ध पुत्री कांचना का विवाह विश्वकर्मा के पुत्र
मनु से हुआ ।

पाराशर मुने पुत्री सौम्यादेवी सुलोचना ।
विश्वकर्म तनुजस्य मय स्यापि कुलांगना ॥
पाराशर मुनि की सुन्दर नेत्रों वाली सौम्या देवी नाम की पुत्री
विश्वकर्मा के पुत्र मय की स्त्री हुई ।

कौशिकस्य मुने पुत्री जयंतीति च विश्रुता ।
विश्वकर्म तनु जस्य भार्या त्वष्टर मून् स्वयम् ॥
कौशिक मुनि की जयन्ती नाम की विदुषी कन्या विश्वकर्मा के पुत्र
त्वष्टा की भार्या हुई ।

विश्वकर्म तनुजस्य पत्नी तक्षस्य चा भवन् ।
करुणा नाम विख्याता ब्रह्मर्षेस्तनया भृगोः ॥
भृगु जी करुणा नाम की कन्या विश्वकर्मा के पुत्र तक्षा (शिल्पी)
की स्त्री हुई ।

कुमारी जैमिने साध्वीः चन्द्रिका नाम विश्रुता ।
विश्वकर्म तनुजस्य दैवज्ञजस्य तमैव च ॥
जैमिनी ऋषि की पुत्री चन्द्रिका जो साध्वी और विदुषी थी वह विश्वकर्मा
के पुत्र दैवज्ञ (विश्वज्ञ) की स्त्री हुई ।

पांचाल ब्राह्मण का गोत्र

पांचाल ब्राह्मण गोत्र बाची गण रत्न महोदधि पांचाल ब्राह्मण गोत्र
वाचक है ।

नडादिभ्यः फक । अष्टाध्यायी अ० ४ पा० १ सू० ६६

इस सूत्रसे ब्रह्मिण गोत्र सिद्ध होता है नडवर शंखक, मित्र, द्वीग,
काश्यप, कृष्ण रणी शंकर जलन्धर, उध्वरायण, ऊध्वर, पांचाल चमासेन
ब्राह्मण, वदर, अश्वल ब्रह्मदत्त, उदुम्बर, इत्यादि ८१ शब्द है ये सब मटापि
ब्राह्मण वर्ण प्रवर्तक है जैसे ताडायण, चारायन, शालकायन जालन्धरायण
अध्वरायण, मैत्रयाण, द्वैरायन, काष्णायन, शरायन, सपांचालायण बादरायण
अश्वलायन, काश्यपायन इत्यादिमें साफ-साफ पांचालायण शब्द गोत्र वाचक
है । अतः उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि पांचाल वर्ण ब्राह्मण वर्ण है ।

अथ गोत्राणि वक्ष्यामि षोडशे यद्विजन्मनाम् ।

कश्यपः काश्यपश्चैव भरद्वाजो धन्वजयः ॥

कात्यायनोप मनु च साकृत् कौशिकस्तथा ।

शांडिल्यो थ वशिष्ठश्च भारद्वाजस्तथैव च ॥

गौतमो गर्गः काविस्तः वत्सः पराशरस्तथा ।

पांचाल च सर्वेषां शाखा वै विश्वकर्माणाम् ॥

पांचाल ब्राह्मणों के सोलह गोत्र हैं उनको कहता हूँ

- (१) कश्यप (२) काश्यप (३) भरद्वाज (४) धन्वजय (५) कात्यायन
(६) उपमन्यु (७) साकृत् (८) कौशिक (९) शांडिल्य (१०) वशिष्ठ
(११) भारद्वाज (१२) गौतम (१३) गर्ग (१४) काविस्त (१५) वत्स एव
(१६) पराशर ।

इन सबों की शाखा विश्वकर्मा हैं ।

—० ककुहास वंश ०—

संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है। वेदों में लिखा अक्षरसह सत्य है। वैदिक काल में शिल्प यज्ञ कर्त्ता को ककुह, ककुहा, ककुहान, ककुहास और कोकास नाम से सम्बोधित किया जाता था। जिनका अर्थ विद्वान होता है। यह यह उपाधि थी। कोकास शब्द की परिभाषा देते हुए “विश्व ब्रह्म वंश मालिका” के लेखक श्रेष्ठ स्वर्गीय पण्डित मन्मू लाल शर्मा जी लिखते हैं कि कोकास शब्द का आश्रय ककुहास है। इसकी उत्पत्ति तीन शब्दों से हुई है। ‘को’ का अर्थ कौशल देश जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म स्थान है। ‘का’ का अर्थ कार्य करना और ‘स’ का अर्थ सनातन महर्षि से हैं। इस प्रकार इन तीन शब्दों के संकलन से कोकास शब्द बना है। इनके मतानुसार कौशल देश के निवास को भी कोकास कहा जाता था।

लेकिन मेरी मान्यता के अनुसार कोकास का अपभ्रंस ककुहास है। ‘क’ का अर्थ प्रकाश ‘कु’ का अर्थ पृथ्वी ‘ह’ का अर्थ आश्चर्यजनक कार्य के कर्त्ता तथा ‘स’ का अर्थ विद्वान से है। इस प्रकार ककुहास का अर्थ पृथ्वी को प्रकाशित करने वाले आश्चर्यजनक कार्य के कर्त्ता विद्वान से है। इसलिए इसे ककुहस कहते हैं। यजुर्वेद में कोकास का अर्थ इस प्रकार बत लाया गया है। कः ओकसो विधत्ते यस्य सः इति। पण्डित कमल किशोर शास्त्री ककुहास का अर्थ करते हुए लिखते हैं संस्कृत में ककुहास शब्द से मीठी-मीठी और प्रायः स्तुति के अर्थ में प्रयुक्त होने वाली वाणी के रूप में होते देखा गया है। इनके अनुसार मीठी-मीठी और प्रिय स्तुति करने के कारण जूना निवासी विश्वकर्मा वंशज ककुहास कहलाये।” ककुह, ककुहा, ककुहास तथा कोकास शब्द ऋग्वेद के अनेक स्थल पर आये हैं जो दृष्टव्य हैं।

प्रवां निचेसः ककुहो वशां अनुपिशङ्गरूपः सदनानिगम्या ।
हरी अन्यस्य पीपयन्त वाजैर्मथना रंजा स्यश्विनाविधोषैः ॥

१/१८१/५

भावार्थ—कुकुह वंश में उत्पन्न होकर अपने यश और पराक्रम को जिसने फैलाया है वह अपने शरीर पर पीला वस्त्र धारण कर तीनों लोक में विराजमान हैं। उनका रथ हरे और पीले रंग के घोड़ों से युक्त है। ऐसे देव रथ विद्या की शिक्षा दें। वह देव हमारी स्तुति से प्रसन्न हो।

श्रिये पूषन्निपुक्तेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
वचन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जुर्णव वरुणस्य भूरेः ॥

१/१८४/३

भावार्थ—हे श्रेष्ठ ककुहास रथकारों। आप लोगों की वाणी रस युक्त है। आप लोगों के पास पीले रंग तथा अनेक प्रकार के साधनों से युक्त रथ हैं। इनको लोक लोकांतर में श्रेष्ठ सम्मान के द्वारा वाणी का आवाहन करते हुए उसे कार्य में इच्छा पूर्वक लगाये। अन्तादि हव्य पदार्थों से परमपिता परमात्मा की उन्नति से देश का सम्मान हो सके। हे ककुहो श्रेष्ठ जन्मों के द्वारा उस परमपिता परमात्मा का स्मरण करते रहो। जिससे सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती रहे।

तांन्वो महो मरुत एवयान्वो विष्णो रेषस्य प्रभृथे हवामहे ।
हिरण्यवर्णा नकुहो न्यवस्युचो ब्रह्मण्यन्तः शस्यः राधर्म हे ॥

२/३४/११

भावार्थ—हे उत्तम कार्य करने वाले मरुदगण। वृद्धावस्था को प्राप्त रथ कर्म के कर्त्ता आप लोग श्रेष्ठ और महान हैं। आप लोग, विष्णु के समान सब व्यापक तथा प्रार्थना योग्य परमात्मा का स्मरण कर अपने कार्य का सम्पादन करते हैं। हिरण्यवर्ण वाले श्रेष्ठ ब्रह्म, स्तुति योग्य है। हे श्रेष्ठ पुरुषों अपने वंश की शिल्प कला रूपी धन से उन्नति करें। अर्थात् शिल्प विद्या से ऐसी वस्तु का निर्माण करें, जिससे हम लोग उन्नति करें और समाज का संचालन ठीक प्रकार से हो सके। ककुहास धन और ज्ञान से सम्पन्न रहे और अपने यश भी बढ़ाये।

विष्णु स्तोमासः पुरुद स्ममर्का भगस्ये व कारिणो यांमनिगमन् ।
उरुक्रमः ककुहो यस्य पूर्वानि मर्द्धन्ति युवतयो जनित्रीः ॥

३/५४/१४

भावार्थ—हे विश्वदेव। आप पूजनीय तथा धन को देने वाले हैं और सभी दिशाओं के जन्मदाता तथा महान कर्म वाले विष्णु के समान हैं। हे देव अपने समान ककुहों को सामर्थ्यवान बनाइये जिस प्रकार विष्णु ने अपने सामर्थ्य से संसार को ढक लिया था उसी प्रकार ककुह भी इस धरती पर छा जायें।

उग्रो वां ककुहो यार्यः शण्वे यामेषु तंतनिः ।
यद्वा दंसोभिरश्विनात्रि नरी ववर्तति ॥
५/७३/६

भवार्थ—हे श्रेष्ठ कर्म करने वाले ककुह रथकारों आप लोगों द्वारा निर्मित रथ बहुत ही विशाल तथा जगत प्रसिद्ध है। इस कार्य को करके हमारे पिता अत्रि देव दुःखों से छुटकारा पा सके थे।

मुष्टुमो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।
उतवा ककुहो मगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वीममश्रुतु हवम् ॥
५/७५/४

भवार्थ—हे धन की वर्षा करने वाले ककुहों! आप द्वारा निर्मित रथ चढ़ने में अति वेग से चलने वाला है। हे अश्विनी कुमारों! आप लोग स्तुति योग्य है यजमान लोग आप लोगों को एकाग्र मन से हवि प्रदान करते हैं।

उदानद ककुहो दिवमुष्टाज्यतुयुजो ददत् ।
श्रवतां यादवं जनम् ॥
८/६/४८

भवार्थ—हे देव उस राजा ने अपने यज्ञ के तेज से स्वर्ग प्राप्ति के लिए ककुह विद्वानों को स्वर्ण से भरे चार ऊटों को दान स्वरूप दिया था।

ककुहं चित् त्वा कवे मन्दन्तु धृष्ट्ना विन्दवः ।
आत्वा पणि यदी महे ॥
८/४५/१४

भवार्थ—हे इन्द्र! आप श्रेष्ठ विद्वान और कवि हैं। जब हम अपनी इच्छा पूर्ति के लिए आपसे याचना करते हैं उस समय आप हमारी इच्छा की पूर्ति करते हैं। इसलिए हम आपको सोम देते हैं।

ककुहः होम्यो रस इन्द्ररिन्द्राय पूज्यः ।
आयुः ववत आयवे ॥
६/६७/८

भवार्थ—पूर्व समय में श्रेष्ठ और उच्च कोटि के विद्वान सोम रस के अधिकारी थे, वह इन्द्र के समान आयु को देने वाले थे। यह सोम उनके द्रोण कलश में देते हैं।

वच्यन्ते वां ककुहासो जुर्णायामाधि विष्टहि ।
यद्वांरथो विमिष्यतात् ॥
१/४६/३

भवार्थ—हे ककुहास देव! आप महान विद्वान हैं शिल्प का विद्यार्थियों को उपदेश दीजिए। आप लोगों का निर्माण किया हुआ विमान पक्षियों के समान अन्तरिक्ष में विचरण करता है इसलिए सभी लोग आपकी स्तुति करते हैं।

युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभि ।
युवोर्वपुरमि पृक्षः सचरते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम ॥
४/४४/२

भवार्थ—हे ककुहास कुमारों! आप सर्व गुण सम्पन्न तथा सुख-दुःख से रहित उपदेशक हैं। आप (दोनों) बुद्धि से लक्ष्मी का सेवन करें। आप लोगों का कार्य उत्तम है। आर लोगों के रथ के उत्तम अश्व होते हैं। आप दोनों के मिलन से सभी दिशाएँ प्राप्त होती हैं।

विश्वकर्मा शिल्प सागर के लेखक श्रीयुक्त रायसाहब पं० दुर्गा प्रसाद जी ने पृष्ठ ३३० पर लिखा है कि विश्वकर्मा के दो पुत्र थे मुपरी और आयसाचार्य। आयसाचार्य के एक पुत्र का नाम भी ककुहास था। ये रथादि के कार्य में निपुण थे इसलिए शिल्प विद्या के कार्य कर्त्ता को ककुहास के नाम से जानते हैं।

इस प्रकार यह प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में उत्तम शिल्प कर्त्ता विद्वानों को ककुह, ककुहान, कोकाश, ककुहास आदि शब्दों से सम्बोधित किया जाता था।

कुकुहास पांचाल ब्राह्मणों के श्रोत्र आदि का विवरण

वर्ण	आस्पद	वर्ण	गोत्र	प्रवर	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	शिखा	पाद	देवता
पांचाल ब्राह्मण	कुकुहास	विश्व कर्म्म	कात्यायन	विश्वामित्र, कात्यायन, किल ... ३	यजुर्वेद	अनुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	दक्षिण	दक्षिण	स्वयं प्रजापति
"	"	"	लपवन्तु	वसिष्ठ, इन्द्रप्रमद, अभरद्व	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	भरद्वाज	अगिरा, बृहस्पति, भरद्वाज	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	मोहित	साकल, सांख्ययन, किल	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	कौशिक	विश्वामित्र, ऊषमर्षण, कौशिक	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	वसिष्ठ	वसिष्ठ, इन्द्रप्रमद, अभरद्व	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	भारद्वाज	अगिरा, बृहस्पति, भरद्वाज	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	गौतम	अगिरा, बृहस्पति, भरद्वाज, गौतम, आर्ष	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	साम	अगिरा, सैम्य गये	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	कात्रिस्त	खिल, कुशिक, कौशिक, काश्यप, माण्डव्य	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	पाराशर	पराशर, वसिष्ठ, सांख्य	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	कश्यप	कश्यप, अतित, देवल	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	आण्डिल्य	आण्डिल्य, अतित, देवल	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	काश्यप	काश्यप, अवत्सार, नैद्युव	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	घननय	विश्वामित्र, माधुच्छन्दस, घननय	"	"	"	"	"	"	"
"	"	"	वत्स	भार्गव, च्यावन, अप्रवान, यामिदन्ति, आर्ष	"	"	"	"	"	"	"

(११)

पांचाल ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा

पांचाल ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा आदि काल से रही है वह संक्षेप में आप सब के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं ।

यः पूजयेद्वास्तु अनेन युक्तं न तस्य दुःख भवती हकिचिन्त ।
जीवत्य सौ वर्ष शतं सुखेन स्वर्गेन सतिष्ठाति कल्यमेकम् ॥

वास्तुशास्त्र अध्याय २२

जो मनुष्य पांचाल शिल्पियों का विधि से पूजन करता है वह कभी दुःख नहीं पाता है और एक कल्प भर स्वर्ग में रहता है ।

रचयंति विवित्राणी रुपाणि विविधानिये ।
पांचालास्ते सदा पूज्याः प्रतिमा विश्वकर्मणः ॥

नाना प्रकार के विमानादि बनाने के कारण पांचाल ब्राह्मणों का सत्कार विश्वकर्मा का स्वरूप मानकर पूजा जाता रहा है ।

इसी प्रकार पद्म पुराण भूखण्ड स्कन्द पुराण विश्वकर्मा महात्म्य में अध्याय २५ श्लोक ७ से १६ तक में विश्वकर्मा की षोडशोपचार पूजा करने की विधि श्री कृष्ण श्री महाराज ने स्वयं ही बतलाई है । ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड राधा कृष्ण सम्वाद अध्याय ४७ श्लोक १, ३७, ३८, ३९ में श्री कृष्ण भगवान ने पांचाल ब्राह्मणों की अनेकी प्रकार के रत्ने से पूजा सत्कार करने की शिक्षा दी है । इसी प्रकार पद्म पुराण भूखण्ड अध्याय २८ श्लोक ७३ से ८१ तक में तथा स्कन्द पुराण प्रभास खण्ड सोमनाथ महात्म्य अध्याय १ श्लोक १६ से २६ तक में भी वर्णन है ।